जम्मू युनिवर्सिटी पोस्ट

उत्कृष्ट भविष्य की ओर अग्रसर

दिसंबर 2024 | जम्मू | वर्ष: 2 | अंक 6

जम्मू विश्वविद्यालय ने मनाया 55वां स्थापना दिवस

शफकत वानी

जम्मू: जम्मू अपने 55वें स्थापना दिवस के अवसर पर उत्साह और गौरव से भरा हुआ था। यह एक ऐसा मील का पत्थर था जिसने दशकों की शैक्षणिक उत्कृष्टता, विकास और सामुदायिक भावना को चिह्नित किया। उत्सवी सजावट से सुसज्जित परिसर, संस्थान की उपलब्धियों और भविष्य के लिए उसके दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रमों की एक श्रृंखला से जीवंत हो उठा। इस अवसर पर कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे, जिनमें दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और जम्मू-कश्मीर उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर दिनेश सिंह मुख्य अतिथि थे। उनके साथ आईआईटी जम्मू के निदेशक प्रोफ़ेसर मनोज सिंह गौड़, प्रोफ़ेसर बेचन लाल, क्लस्टर विश्वविद्यालय जम्मू के कुलपति, तथा प्रो. प्रगति कुमार, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय के कुलपति, की उपस्थिति ने इस अवसर को और अधिक गरिमामय बना दिया।

अपने मुख्य भाषण में, प्रोफ़ेसर दिनेश सिंह ने एक चिंतनशील स्वर में विश्वविद्यालय समुदाय से आग्रह किया कि वे स्थापना दिवस को केवल एक उत्सव के रूप में न देखें, बल्कि आत्मनिरीक्षण के एक अवसर के रूप में देखें। उन्होंने कहा, "ये मील के पत्थर हमें रुकने, मूल्यांकन करने और निरंतर सुधार के लिए प्रयास करने की याद दिलाते हैं," और उनके शब्द उपस्थित छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के दिलों में गूंज उठे। उन्होंने न केवल मन, बल्कि समाज के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की उभरती भूमिका के बारे में भावुकता से बात की, जिससे श्रोताओं में से कई लोगों को विश्वविद्यालय की विरासत में अपने योगदान पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

कुलपति प्रोफ़ेसर उमेश राय ने विश्वविद्यालय की हालिया उपलब्धियों का ज़िक्र किया। उन्होंने एनआईआरएफ-2024 रैंकिंग में जम्मू विश्वविद्यालय की शानदार बढ़त पर प्रकाश डाला, जिसने देश भर के विश्वविद्यालयों में 50वाँ स्थान हासिल किया। जब उन्होंने घोषणा की कि विश्वविद्यालय के बिज़नेस स्कूल ने 'द वीक' के सरकारी बी-स्कूल श्रेणी में उल्लेखनीय 18वाँ स्थान प्राप्त किया है, तो उपस्थित लोगों ने तालियाँ बजाईं। प्रोफ़ेसर राय ने कृतज्ञता से भरे स्वर में कहा, "ये उपलब्धियाँ हमारे छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों की कड़ी मेहनत और समर्पण का प्रमाण हैं।"

इस कार्यक्रम में एक भावपूर्ण मोड़ भी आया जब विश्वविद्यालय ने अपने पूर्व और वर्तमान योगदानकर्ताओं को सम्मानित किया। पूर्व कुलपति प्रो. वाई.आर. मल्होत्रा के साथ-साथ पूर्व कर्मचारियों कुलभूषण गुप्ता, राज कुमार, पंजाब सिंह, दयाल चंद, कुर्कू राम और शकीना को भी सम्मानित किया गया, जिनकी वर्षों की सेवा ने संस्थान को आकार देने में मदद की। सेवारत कर्मचारियों प्रो. के.एस. चरक और विनोद बाली को भी उनके समर्पण के लिए सम्मानित किया गया, साथ ही उन छात्रों को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने खेल, एनसीसी और एनएसएस में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जिससे विश्वविद्यालय के समग्र विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक बना।

जम्मू विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रोफ़ेसर राहुल गुप्ता ने हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन दिया और इस दिन को यादगार बनाने वाले सभी लोगों के प्रयासों की सराहना की। प्रोफ़ेसर गरिमा गुप्ता ने कुशलतापूर्वक कार्यवाही का संचालन किया और सुनिश्चित किया कि कार्यक्रम निर्बाध रूप से चले, जिससे सभी में गर्व और एकता की भावना बनी रहे।

इंडिया टुडे रैंकिंग में बिजनेस स्कूल ने 5वां स्थान हासिल किया

जम्मू

जम्मू विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत गौरव की बात यह है कि द बिज़नेस स्कूल (टीबीएस) ने नई ऊँचाइयों को छूते हुए प्रतिष्ठित इंडिया टुडे 2024 रैंकिंग में "वैल्यू फॉर मनी" श्रेणी में 5वां और समग्र सरकारी बी-स्कूल श्रेणी में 28वां स्थान प्राप्त किया है। यह उपलब्धि पिछले वर्ष इसी श्रेणी में 9वें स्थान से एक महत्वपूर्ण छलांग है।

देश के शीर्ष प्रबंधन संस्थानों में शामिल होने वाला जम्मू और कश्मीर का एकमात्र बी-स्कूल होने के नाते, टीबीएस ने एक बार फिर अपनी योग्यता साबित की है। अकादमिक उत्कृष्टता के मूल्यांकन में एक स्वर्णिम मानक, इंडिया टुडे रैंकिंग, एक और सम्मान के तुरंत बाद आती है: अक्टूबर 2024 में प्रकाशित बीटी-एमडीआरए सर्वश्रेष्ठ बी-स्कूल सर्वेक्षण रजत जयंती संस्करण, जिसने टीबीएस को निवेश पर लाभ (आरओआई) में 8वां और सरकारी बी-स्कूल श्रेणी में 28वां स्थान दिया।

कुलपति प्रोफ़ेसर उमेश राय ने इस उपलब्धि पर खुशी व्यक्त की और कहा, "यह परिणाम हमारे छात्रों, संकाय और कर्मचारियों के अथक परिश्रम का परिणाम है। यह हमें और भी बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है।"

पर्यावरणीय स्थिरता: विश्वविद्यालय ने परिसर में चार पहिया वाहनों पर प्रतिबंध लगाया

सुहानी गुप्ता

जम्मू: पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, जम्मू विश्वविद्यालय ने अपने परिसर को चार पहिया वाहन निषेध क्षेत्र घोषित कर दिया है। यह घोषणा विश्वविद्यालय की चल रही हरित परिसर पहल में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो पर्यावरण के प्रति जागरूक शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक नया मानक स्थापित करती है।

इस निर्णय की घोषणा मुख्य प्रॉक्टर प्रोफ़ेसर प्रकाश अंताल ने की, उनके साथ योजना एवं विकास विभाग की डीन प्रोफ़ेसर मीना शर्मा और रजिस्ट्रार नीरज शर्मा सहित वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे। एक स्वच्छ और हरित परिसर के साझा दृष्टिकोण के साथ, विश्वविद्यालय कार्बन उत्सर्जन को कम करने, वायु गुणवत्ता में सुधार लाने और पैदल यात्रियों के अनुकूल वातावरण बनाने के लिए निर्णायक कदम उठा रहा है।

"यह सिर्फ़ एक नीति से कहीं बढ़कर है—यह एक स्वस्थ और टिकाऊ भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता है," प्रोफ़ेसर अंताल ने कहा। "छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के साथ गहन विचार-विमर्श के बाद, हमें विश्वास है कि यह कदम अन्य संस्थानों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करेगा।" उन्होंने बताया कि यह पहल कुछ समय से चल रही थी, लेकिन निर्धारित पार्किंग सुविधा के अभाव में इसमें देरी हो रही थी। अब परिसर के ठीक बाहर एक नए पार्किंग क्षेत्र के निर्माण के साथ, विश्वविद्यालय इस परिवर्तनकारी बदलाव को अपनाने के लिए तैयार है।

चार पहिया वाहनों पर प्रतिबंध पर्यावरण-अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सुचारू परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए, दोपहिया वाहनों को अभी भी अनुमति दी जाएगी, और विभागीय क्षेत्रों के पास समर्पित पार्किंग स्थल आवंटित किए जाएँगे। विश्वविद्यालय सभी के लिए सुलभता और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए परिसर में रणनीतिक रूप से रखे गए ई-वाहनों और साइकिलों सहित वैकल्पिक परिवहन विकल्पों पर भी काम कर रहा है।

नेतृत्व के एक सशक्त संकेत के रूप में, कुलपति प्रोफ़ेसर उमेश राय ने परिसर में अपने वाहन का उपयोग न करके, स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करने का संकल्प लिया है। प्रोफ़ेसर अंताल ने कुलपति की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए कहा, "यह एक सामूहिक प्रयास है। हम सभी इसमें साथ हैं—छात्र, शिक्षक, कर्मचारी और व्यापक समुदाय—ताकि हमारा परिसर स्थिरता का प्रतीक बन सके।"

जम्मू विश्वविद्यालय पर्यावरणीय नवाचार के लिए कोई नई बात नहीं है। एक आधिकारिक प्रवक्ता ने संस्थान की पर्यावरण संबंधी उपलब्धियों पर गर्व से प्रकाश डाला, जिसमें 1095 किलोवाट ग्रिड-आधारित सौर ऊर्जा संयंत्र, सौर स्ट्रीट लाइटें, एलईडी लाइटिंग, छतों पर वर्षा जल संचयन प्रणाली, वर्मीकंपोस्टिंग, बायोगैस संयंत्र और मज़बूत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियाँ शामिल हैं। इन प्रयासों के लिए विश्वविद्यालय को शिक्षा मंत्रालय से ज़िला ग्रीन चैंपियन पुरस्कार और पर्यावरण प्रबंधन के लिए प्रतिष्ठित आईएसओ 14001-2015 प्रमाणन जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं।

प्रवक्ता ने कहा, "हमारा परिसर पहले से ही साइकिल और ई-वाहनों जैसे प्रदूषण-मुक्त विकल्पों का केंद्र है। यह नई पहल उसी विरासत को आगे बढ़ाती है, और यह सुनिश्चित करती है कि हमारे छात्र और संकाय एक स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण में फल-फूल सकें।"

विश्वविद्यालय ने इस साहसिक यात्रा की शुरुआत करते हुए, अपने जीवंत हितधारकों से इस पहल के पीछे एकजुट होने का आह्वान किया है। प्रोफ़ेसर अंताल ने आग्रह किया, "हम सब मिलकर इस दृष्टिकोण को साकार कर सकते हैं।" उन्होंने सभी से इस बदलाव को उत्साहपूर्वक अपनाने का आह्वान किया।

प्रो. मीना शर्मा का साक्षात्कार

जिज्ञासु बनें, आलोचनात्मक सोच रखें, और उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हों: योजना संकायाध्यक्ष (डीन योजना)

JU POST: कृपया अपने प्रारंभिक जीवन और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बारे में बताएं।

प्रो. मीना: मैं पंजाब से हूं, जहां शिक्षा को हमारे जीवन में विशेष महत्व दिया जाता था। मेरे पिता, जो पंजाब विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर थे, ने हमारे परिवार में सीखने की संस्कृति स्थापित की। मैंने अपनी स्कूली शिक्षा, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर तक की पढ़ाई—यहां तक कि एम.फिल.—पंजाबी विश्वविद्यालय से पूरी की, जो मेरे विषय के लिए एक उत्कृष्ट संस्थान है। 1986 में जब मेरे पिता कुलपति नियुक्त हुए, हम एक नए विश्वविद्यालय में स्थानांतरित हुए। मैंने 1988 में पीएच.डी. आरंभ की और 1992 में यहां संकाय से जुड़ गई।

JU POST: आपने विज्ञान और विशेष रूप से रसायन विज्ञान को ही क्यों चुना?

प्रो. मीना: मेरा पालन-पोषण एक अकादमिक वातावरण में हुआ, जिससे विज्ञान की ओर आकर्षण स्वाभाविक था। मेरे पिता के शोध कार्य और हमारे घर में जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण मेरी दिशा तय करने में निर्णायक रहा। छोटी उम्र से ही मैंने जाना कि मैं विज्ञान, विशेष रूप से रसायन शास्त्र में करियर बनाना चाहती हूं।

JU POST: एक महिला वैज्ञानिक के रूप में आपको किन चुनौतियों और अवसरों का सामना करना पड़ा?

प्रो. मीना: विज्ञान की चुनौतियां लिंग से परे होती हैं। जब मैं छात्रा थी, तब संसाधनों की भारी कमी थी। आज की तुलना में सुविधाएं बेहद सीमित थीं, लेकिन हमने अपनी मेहनत और समर्पण से कमी की भरपाई की। अब भी सफलता का मूलमंत्र वही है—निरंतर प्रयास और समर्पण। समाज की अपेक्षाएं भिन्न हो सकती हैं, लेकिन विज्ञान का क्षेत्र सभी के लिए समान है।

JU POST: वर्तमान में छात्रों के लिए विज्ञान शिक्षा का क्या महत्व है?

प्रो. मीना: विज्ञान केवल वैज्ञानिकों के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए आवश्यक है। यह सोचने, तर्क करने और अवलोकन की क्षमता विकसित करता है। मैं बचपन में अपने पिता से पूछती थी, "बल्ब के पास हाथ क्यों गर्म लगता है?" यही सवाल मेरे भीतर वैज्ञानिक सोच की चिंगारी बना। यह दृष्टिकोण जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी है।

JU POST: विश्वविद्यालय के बुनियादी ढांचे में क्या बदलाव आए हैं?

प्रो. मीना: परिवर्तन अत्यंत सराहनीय है। जब मैंने शुरुआत की थी, संसाधनों की भारी कमी थी। अब हमारे पास विज्ञान सहित कई क्षेत्रों में अत्याधुनिक सुविधाएं हैं, जो शोध और नवाचार को प्रोत्साहित कर रही हैं।

JU POST: आप छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कैसे विकसित करती हैं?

प्रो. मीना: वैज्ञानिक दृष्टिकोण केवल विज्ञान तक सीमित नहीं है। यह एक दृष्टिकोण है जिसमें हम सवाल करते हैं, "क्यों?", परिकल्पना बनाते हैं और प्रयोग द्वारा सत्यापन करते हैं। मैं छात्रों से पूछती हूं, "आप यह विषय क्यों पढ़ना चाहते हैं?" जब उद्देश्य स्पष्ट होता है, तो परिणाम भी स्पष्ट और प्रभावशाली होते हैं।

JU POST: आपने योजना और विकास की डीन के रूप में क्या अनुभव किया?

प्रो. मीना: यह भूमिका मेरी वैज्ञानिक सोच का विस्तार थी। विभागों की ज़रूरतों का विश्लेषण कर, हमने अनेक विकास परियोजनाएं बनाई और उन्हें लागू किया। बीसीसीआई-अनुमोदित क्रिकेट स्टेडियम इस प्रयास की एक बड़ी उपलब्धि है।

JU POST: आप उत्साह क्लब और अन्य गतिविधियों में भी शामिल हैं। उसमें वैज्ञानिक सोच को कैसे जोड़ती हैं?

प्रो. मीना: मैं हर गतिविधि में संरचना और उद्देश्य को प्राथमिकता देती हूं। एक सुव्यवस्थित कैलेंडर बनाकर छात्रों को सक्रिय रूप से जोड़ा जाता है। मैं परिणाम-उन्मुख दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती हूं।

JU POST: व्यक्तिगत जीवन और नेतृत्व भूमिकाओं को संतुलित करना कैसे संभव हुआ?

प्रो. मीना: सबसे कठिन समय तब होता है जब बच्चे छोटे होते हैं। उस समय मैंने प्राथमिकता परिवार को दी। मेरा सिद्धांत है—काम को घर न ले जाएं। प्रतिदिन के कार्य उसी दिन निपटाएं, ताकि मानसिक शांति बनी रहे।

JU POST: पत्रकारिता और मीडिया स्टडीज़ के महत्व पर आपका क्या मत है?

प्रो. मीना: मीडिया इतिहास को जीवंत रूप में दर्ज करता है। आज के छात्र वही लिख रहे हैं जो कल के इतिहास में पढ़ा जाएगा। उनके लेखन में सत्यता, संतुलन और निष्पक्षता अत्यंत आवश्यक है।

JU POST: छात्रों के लिए आपका अंतिम संदेश क्या है?

प्रो. मीना: हमेशा जिज्ञासु बने रहें और "क्यों?" पूछते रहें। किसी भी क्षेत्र में स्पष्ट उद्देश्य और निरंतरता से ही उत्कृष्टता प्राप्त की जा सकती है। दूसरों से नहीं, स्वयं के अतीत से प्रतिस्पर्धा करें।

जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता छात्र कैंपस परियोजनाओं के माध्यम से समाज को समझ रहे हैं

डॉ. रमियां भारद्वाज

जम्मू: जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता के छात्र अपनी शैक्षणिक परियोजनाओं के माध्यम से कक्षा से बाहर निकलकर वास्तविक जीवन के सामाजिक सरोकारों को दर्ज करके अपनी पहचान बना रहे हैं। ये पहल—क्षेत्रीय रिपोर्टों और वृत्तचित्रों से लेकर डिजिटल स्टोरीटेलिंग तक—छात्रों को समाज को समझने में मदद कर रही हैं और साथ ही उनके पेशेवर कौशल को भी निखार रही हैं।

कुलपति प्रोफेसर उमेश राय के नेतृत्व में, पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग अनुभवात्मक शिक्षा की संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है। विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर गरिमा गुप्ता ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि ऐसी परियोजनाएँ सिद्धांत और व्यवहार के बीच की खाई को पाटती हैं। उन्होंने कहा, "जब छात्र मैदान में कदम रखते हैं और समुदायों के साथ बातचीत करते हैं, तो वे ज़िम्मेदार पत्रकारिता का सार सीखते हैं।"

प्रोफेसर दुष्यंत कुमार राय, डॉ. रमियान भारद्वाज, डॉ. प्रदीप बाली और डॉ. कुमेरजीत चजगोत्रा सहित संकाय सदस्य सक्रिय रूप से छात्रों का मार्गदर्शन कर रहे हैं और उन्हें पर्यावरणीय स्थिरता, डिजिटल संस्कृति और लैंगिक गतिशीलता जैसे मुद्दों का अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। उनका मार्गदर्शन यह सुनिश्चित करता है कि परियोजनाएँ न केवल शैक्षणिक मानकों को पूरा करें, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी प्रतिबिंबित करें।

हाल ही में छात्रों द्वारा किए गए कार्यों ने युवा पहचान को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका, जम्मू में शहरी अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियों और ग्रामीण समुदायों में लचीलेपन की कहानियों जैसे विषयों पर प्रकाश डाला है। कुछ वृत्तचित्र स्थानीय सांस्कृतिक समारोहों में भी प्रदर्शित किए गए हैं, जबकि शोध-आधारित परियोजनाओं को गैर-सरकारी संगठनों से सराहना मिली है।

छात्र इस अनुभव को परिवर्तनकारी बताते हैं। एक अंतिम वर्ष के छात्र ने कहा, "हमने महसूस किया कि पत्रकारिता केवल रिपोर्टिंग से कहीं अधिक है - यह अनसुनी आवाज़ों को बुलंद करने और संवाद को आगे बढ़ाने के बारे में है।"

अपने दूरदर्शी नेतृत्व और समर्पित संकाय के सहयोग से, जम्मू विश्वविद्यालय का पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग सामाजिक रूप से जागरूक कहानीकारों को तैयार कर रहा है जो पत्रकारिता को परिसर की चारदीवारी से परे ले जाने के लिए तैयार हैं।

हिंदी दिवस पर साहित्यिक उत्साह के साथ चमका जम्मू विश्वविद्यालय

शुभम चौधरी

हिंदी साहित्य की धुन से वातावरण गूंज उठा जब जम्मू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययन विभाग, धन्वंतरि पुस्तकालय और अनुवाद क्लब ने मिलकर हिंदी दिवस का आयोजन किया। यह कार्यक्रम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) जम्मू के सौजन्य से आयोजित किया गया, जो हिंदी भाषा और उसकी समृद्ध साहित्यिक विरासत को समर्पित एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि थी।

इस दिन की शुरुआत संगोष्ठी से हुई, जिसमें पत्रकारिता एवं जनसंचार और अंग्रेज़ी विभागों के 14 छात्रों ने मंच पर आकर प्रतिष्ठित हिंदी लेखकों पर अपने विचार साझा किए। प्रेमचंद की कालजयी कहानियों से लेकर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, भवानी प्रसाद मिश्र और हरिवंश राय बच्चन की काव्य प्रतिभा तक, छात्रों की प्रस्तुतियों ने हिंदी साहित्य की आत्मा को जीवंत कर दिया। पत्रकारिता विभाग के प्रथम सेमेस्टर के छात्र आर्यन ने अपनी प्रभावशाली प्रस्तुति से प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि सुहानी गुप्ता और साक्षी शॉनी ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त किया।

इस आयोजन का मुख्य आकर्षण एक पैनल चर्चा थी, जिसमें प्रतिष्ठित विद्वानों और संकाय सदस्यों ने भाग लिया। इतिहास विभाग से प्रो. शाम नारायण लाल, पत्रकारिता विभाग से प्रो. दुष्यंत कुमार राय, IGNCA की क्षेत्रीय निदेशक डॉ. श्रुति अवस्थी, और विश्वविद्यालय के पुस्तकालय प्रभारी डॉ. विक्रम साही ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर और एच.एस.वी. अज्ञेय जैसे साहित्यिक महापुरुषों के योगदान पर विचार साझा किए। इस चर्चा ने हिंदी भाषा के विकास को एक जुझारू, रचनात्मक और सांस्कृतिक पहचान के रूप में उजागर किया। स्वाति ने अपनी उत्कृष्ट संगठनात्मक क्षमताओं से कार्यक्रम को सुचारु रूप से संचालित किया और एक सौहार्दपूर्ण वातावरण सुनिश्चित किया। कार्यक्रम का समापन डॉ. विक्रम साही के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिन्होंने प्रतिभागियों के उत्साह और हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम की सराहना की।

भारत का सुनहरा रत्न: जम्मू-कश्मीर की दुर्लभ गुच्छी मशरूम

सुहानी गुप्ता

जम्मू-कश्मीर के देवदार वनों में छिपा हुआ एक पाक खजाना हर वसंत में अपनी झलक दिखाता है—गुच्छी मशरूम, जिसे मोरल भी कहा जाता है। यह मशरूम दुनिया के सबसे महंगे खाद्य पदार्थों में शामिल है, जिसकी कीमत ₹30,000 प्रति किलोग्राम तक पहुंच जाती है। हर वसंत में लोग इन सुनहरे रत्नों की तलाश में जंगलों में निकल पड़ते हैं। गुच्छी मशरूम अपनी मधुकोश जैसी बनावट और हल्के पीले व नारंगी रंगों के कारण पहचान में आता है। इसका मिट्टी-सा स्वाद, अखरोट जैसी खुशबू और मांसल बनावट इसे विश्व के उच्चस्तरीय रसोईघरों का पसंदीदा बनाती है। यूरोप के मिशेलिन-स्टार रेस्तरां से लेकर अमेरिका के फाइन-डाइनिंग स्थलों तक, इसका उपयोग किया जाता है।

स्वाद से परे, गुच्छी मशरूम स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी बेमिसाल है। यह एंटीऑक्सीडेंट्स, प्रोटीन, फाइबर, विटामिन डी और बी-विटामिन्स से भरपूर होता है, जो कैंसर-रोधी गुणों, हड्डियों को मज़बूती देने और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। गुच्छी को खास और महंगा बनाने वाली बात यह है कि इसे व्यावसायिक रूप से उगाना संभव नहीं है। यह केवल जंगली वातावरण में ही पनपता है, और इसके लिए नमी, तापमान और मिट्टी की विशेष संरचना की आवश्यकता होती है। इसलिए इसकी खोज एक कठिन और अनिश्चित कार्य होती है। स्थानीय लोगों के लिए गुच्छी सीज़न रोमांच और अवसर से भरा होता है। पूरे समुदाय—अनुभवी संग्राहकों से लेकर युवा खोजकर्ताओं तक—वनों की ओर निकलते हैं, पीढ़ियों से चली आ रही जानकारी के साथ। इन मशरूमों को खोजने के लिए पैनी नजर और धैर्य चाहिए, क्योंकि वे अपने वातावरण में आसानी से छिप जाते हैं। गुच्छी मशरूम सिर्फ एक खाद्य पदार्थ नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक प्रतीक है, जो प्रकृति के साथ

सामंजस्य और क्षेत्र की जैव विविधता को दर्शाता है। स्थानीय व्यंजनों में इसका उपयोग विशेष रूप से "गुच्छी पुलाव" में होता है, जो साधारण चावल को भी स्वाद की ऊंचाइयों तक ले जाता है।

भारत, विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर, इस दुर्लभ मशरूम का वैश्विक एकाधिकार रखता है। इन्हें अमेरिका और यूरोप के चुनिंदा बाजारों में निर्यात किया जाता है, जहां यह विश्वभर के प्रसिद्ध शेफ और खाद्य प्रेमियों की पहली पसंद है। इसके प्रमुख निर्यात केंद्रों में दिल्ली एयर कार्गो, मुंद्रा, नावा शेवा सीपोर्ट और पुणे (JNPT) शामिल हैं, जो इन्हें विश्व के कोनों तक ताजगी से पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बाहु किला: जम्मू का ऐतिहासिक और आध्यात्मिक प्रहरी

वैशाली देवी

तवी नदी के किनारे शान से खड़ा बाहु किला, जम्मू की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और अडिग आत्मा का प्रतीक है। माना जाता है कि यह किला राजा बाहुलोचन द्वारा 3,000 वर्ष पूर्व बनवाया गया था। यह केवल एक ऐतिहासिक स्मारक नहीं, बल्कि शहर की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का जीवंत प्रतीक है।

इस किले की पुरानी दीवारें डोगरा वीरता और धैर्य की कहानियाँ सुनाती हैं। प्रारंभ में सुरक्षा उद्देश्यों से निर्मित इस किले का पुनर्निर्माण 19वीं सदी में डोगरा शासकों द्वारा किया गया था, जिसमें सामरिक वास्तुकला और शाही सौंदर्य का अद्भुत समावेश है। इसका स्थान रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहां से पूरे जम्मू और तवी नदी का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। किले के केंद्र में स्थित है बावे वाली माता का मंदिर, जो देवी काली को समर्पित है। नवरात्रि के समय यहां हजारों श्रद्धालु आते हैं, जब यह स्थल पूजा, भक्ति और उत्सव के रंग में डूब जाता है। इस मंदिर की आध्यात्मिक ऊर्जा और किले का ऐतिहासिक महत्व इसे आस्था और धरोहर का अद्वितीय संगम बनाता है। पर्यटक यहां की मज़बूत प्राचीरों, भित्तिचित्रों और शांत महाकाली मंदिर परिसर से मोहित हो जाते हैं। इसके पास स्थित बाग-ए-बाहु, एक मुगल शैली का सुंदर बाग़, इस क्षेत्र की शोभा और बढ़ा देता है, जो आगंतुकों को सुकून प्रदान करता है। बाहु किला केवल एक स्मारक नहीं, बल्कि जम्मू की धड़कन है—जहां अतीत वर्तमान से मिलता है, और हर आगंतुक को इसकी कालातीत कहानियों की ओर आकर्षित करता है।

छात्राओं के छात्रावासों में नशा विरोधी अभियान का आयोजन

जोगिंदर सिंह

जम्मू: जम्मू विश्वविद्यालय के छात्राओं के छात्रावासों के बोर्डर और प्रबंधन ने नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत एकजुट होकर नशे के खिलाफ एक प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित किया। यह राष्ट्रीय स्तर पर चलाया जा रहा अभियान युवाओं को जागरूक करने और समाज को नशा-मुक्त बनाने के उद्देश्य से चलाया गया, जिसमें विद्यार्थियों, कर्मचारियों और संकाय सदस्यों ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के छात्रावास परिसर में आयोजित किया गया, जिसमें नशे की हानियों को उजागर करने और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए अनेक रचनात्मक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। प्रो. शशि मनहास, प्रोवोस्ट, गर्ल्स हॉस्टल्स ने सामुदायिक सहयोग और प्रारंभिक जागरूकता की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "सामूहिक प्रयास और जागरूकता से ही हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जो नशे के चंगुल से मुक्त, स्वस्थ और खुशहाल हो।" डॉ. चिन्मयी महाराणा, सरोजिनी नायडू छात्रावास की वार्डन, ने व्यसन विज्ञान की जानकारी देते हुए बताया कि किस प्रकार मस्तिष्क नशीले पदार्थों पर निर्भर हो जाता है। उन्होंने पुनर्वास कार्यक्रमों की महत्ता पर प्रकाश डाला। वहीं, डॉ. सोनिया एम. सीबीजीएच की रेज़िडेंट वार्डन, ने ध्यान और योग की शक्ति पर बल दिया और बताया कि यह आत्म-जागरूकता का मार्ग नशे से मुक्ति में सहायक हो सकता है।

कार्यक्रम में स्लोगन लेखन, पोस्टर निर्माण, और नुक्कड़ नाटक जैसी प्रभावशाली गतिविधियाँ शामिल थीं, जिनमें छात्राओं ने भाग लिया। इन गतिविधियों ने नशा विरोधी संदेश को प्रभावी ढंग से प्रसारित किया और विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों को प्रेरित किया। प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए नारे और पोस्टर परिसर में प्रमुखता से प्रदर्शित किए गए, जो उनके उत्साह और रचनात्मकता के परिचायक थे। नुक्कड़ नाटक ने विषय को जीवंत कर दिया और दर्शकों के बीच सार्थक संवाद की शुरुआत की।

विश्वविद्यालय में अंतर-महाविद्यालयीय प्रतियोगिता में प्रतिभा और टीम भावना का जश्न

सुहानी गुप्ता

जम्मू: जम्मू विश्वविद्यालय के जिम्नेज़ियम हॉल में अंतर-महाविद्यालय बैडमिंटन और किकबॉक्सिंग चैम्पियनशिप 2024-25 के समापन के अवसर पर उत्साह और ऊर्जा की लहर दौड़ गई। खेल एवं शारीरिक शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित इस आयोजन ने क्षेत्र के विभिन्न महाविद्यालयों से आए युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा, खेल भावना और जज़्बे का प्रदर्शन किया, जिसने दर्शकों को गर्व और प्रेरणा से भर दिया।

महिला बैडमिंटन वर्ग में जम्मू विश्वविद्यालय के पीजी विभाग ने शानदार प्रदर्शन करते हुए MIER कॉलेज जम्मू को सीधे 2-0 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। वहीं GCW परेड ने एक रोमांचक मुकाबले में MIER कॉलेज को 2-1 से मात देकर चैम्पियनशिप के फाइनल में जगह बनाई। खिलाड़ियों की चुस्ती और सटीकता ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, हर रैली एक रोमांचक क्षण बन गई।

इस प्रतियोगिता का संचालन डॉ. अरुण कुमार, निदेशक, खेल एवं शारीरिक शिक्षा निदेशालय के नेतृत्व में कुशलता से किया गया। डॉ. दौद इकबाल बाबा ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनके साथ मलिक एजाज, राज कुमार बक्शी, रविश वैद, विकास करलोपिया, और जय भारत जैसे अधिकारी भी उपस्थित रहे, जिनकी उपस्थिति ने खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया। मैचों का संचालन निष्पक्षता से रविश वैद, विनय मनहास, जीवन लाल, अर्जुन शर्मा और हृतिक जंडियाल ने किया।

स्कोर से कहीं अधिक, यह प्रतियोगिता मित्रता और दृढ़ संकल्प का उत्सव थी। विभिन्न कॉलेजों की टीमों ने अद्भुत खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया, और हर सर्व, स्मैश और बचाव में उनका जुनून साफ झलकता रहा। इस आयोजन ने न केवल एथलेटिक क्षमताओं को मंच दिया, बल्कि छात्रों में एकता की भावना को भी मजबूत किया। जैसे ही अंतिम शटल कोर्ट पर गिरी और पदक वितरित हुए, यह चैम्पियनशिप जम्मू विश्वविद्यालय की जीवंत खेल संस्कृति में एक अमिट छाप छोड़ गई—आने वाले खिलाड़ियों को दिल से खेलने और सपनों को साकार करने की प्रेरणा देती हुई।

विश्वविद्यालय परिसर के उपेक्षित साथी

जानवी शर्मा

जम्मू विश्वविद्यालय के व्यस्त मार्गों और शांत हरियाली के बीच कुछ मूक साथी बेझिझक घूमते रहते हैं—आवारा कुत्ते। पूंछ हिलाते और मासूम आंखों वाले ये चारपाए, विश्वविद्यालय की जीवंतता में एक आत्मीय रंग घोलते हैं और छात्रों तथा कर्मचारियों की दिनचर्या का एक अदृश्य हिस्सा बन गए हैं।

विश्वविद्यालय के विस्तृत परिसर में, धन्वंतरि पुस्तकालय की छांव से लेकर तवी नदी के किनारों तक, ये कुत्ते केवल राहगीर नहीं हैं। उन्हें अक्सर कैंटीन के पास लेटे हुए या हॉस्टलों के पास एक-दूसरे से खेलते हुए देखा जा सकता है। छात्र इनसे प्रेमपूर्वक खाना साझा करते हैं, तो कुछ संकाय और कर्मचारी उनके लिए पानी और बचा हुआ खाना छोड़ जाते हैं—एक मौन स्नेह का रिश्ता पनप गया है। जम्मू विश्वविद्यालय के ये आवारा कुत्ते केवल परिसर की पृष्ठभूमि नहीं हैं; ये अनौपचारिक शुभंकर बन गए हैं। जब वे पेड़ों की छांव में झपकी लेते हैं या छात्रों के साथ-साथ चलते हैं, तो वे इस शैक्षणिक स्थल की धड़कनों में अपनी मासूम उपस्थिति जोड़ते हैं।

वे हमें याद दिलाते हैं कि छोटी आत्माएं भी हृदय पर गहरे निशान छोड़ जाती हैं—और यही इन्हें इस अकादमिक संसार का खास हिस्सा बनाता है।

संपादकीय टीम

मुख्य संपादक: प्रो. गरिमा गुप्ता, **प्रबंध संपादक:** प्रो. दुश्यंत कुमार राय, **समाचार संपादक:** डॉ. रमियान भारद्वाज, **वरिष्ठ सहायक संपादक:** सुहानी गुप्ता, अनामिका पाल, दिलजीत सिंह, जोगिंदर सिंह, **सहायक संपादक:** नियति वर्मा, शुभम कोटलवाल, अधिति राजपूत, आलंक्रित पठियाल